पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 6

प्रश्न बैंक

अध्याय 6: सबसे खतरनाक

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 6: सबसे खतरनाक

कवि: अवतार सिंह संधू 'पाश'

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

कवि पाश कहता है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार और गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती। बैठे-बिठाए पकड़ा जाना बुरा तो है और सहमी-सी चुप में जकड़ा जाना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं होता। कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है, किसी जुगनू की लौ में पढ़ना बुरा तो है और मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं होता।

सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना, न होना तड़प का और सब सहन कर जाना। घर से निकलना काम पर और काम से लौटकर घर आना, यही बंधी-बँधाई जिंदगी सबसे खतरनाक है। सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है।

कवि का संदेश यह है कि बुरी से बुरी खतरनाक परिस्थितियों में भी हम अपने सपने को न मरने दें। अन्याय, छल-कपट और शोषण को बिना विरोध किए, मुर्दे की तरह जीना बाकी स्थितियों से अधिक खतरनाक है। जिस व्यक्ति में व्यवस्था को देखकर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती, वह जिंदा नहीं, चलती-फिरती लाश के समान है।

भावार्थ

पहला पद्यांश

मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती

भावार्थ: कवि कहता है कि किसी भी समाज में रहने वाले व्यक्ति के लिए किसी के द्वारा उसकी मेहनत की कमाई लूट लिया जाना, दोषी न होते हुए भी पुलिस का अत्याचार सहना या किसी के द्वारा किए गए विश्वासघात और रिश्वतखोरी का शिकार होना उतना खतरनाक नहीं है। हालाँकि ये सारी स्थितियाँ किसी भी व्यक्ति के लिए खतरनाक हैं, लेकिन कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता, क्योंकि समाज में इससे भी बुरी और खतरनाक स्थितियाँ हैं जिनका शिकार आम आदमी को अपने रोजमर्रा के जीवन में होना पड़ता है। अगर कोई हमारी मेहनत को लूट ले जाए तो फिर से मेहनत करके उसे पाया जा सकता है, इसलिए मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं है।

दूसरा पद्यांश

बैठे-बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है
सहमी-सी चुप में जकड़े जाना बुरा तो है
पर सबसे खतरनाक नहीं होता

भावार्थ: कवि कहता है कि आज की भ्रष्ट व्यवस्था में पुलिस भी भ्रष्ट हो चुकी है। अपराध की रोकथाम न कर पाने और नेताओं के दबाव में वह भी गलत कदम उठाती है। हाय-हल्ला मचने पर वह खानापूर्ति के लिए अपराधियों के बजाय आम आदमी को पकड़ लेती है और अपनी सफलता का ढिंढोरा पीटती है। लोग भय के कारण सहमकर चुप्पी ओढ़े रहते हैं। ये स्थितियाँ अच्छी तो नहीं कही जा सकतीं, फिर भी कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता, क्योंकि समाज में इससे भी खतरनाक स्थितियों को भोगने के लिए लोग विवश हैं।

birlaeducation.org

तीसरा पद्यांश

कपट के शोर में
सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है
किसी जुगनू की लौ में पढ़ना बुरा तो है
मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना बुरा तो है
सबसे खतरनाक नहीं होता

भावार्थ: कवि कहता है कि आज की भ्रष्ट व्यवस्था में गलत, छली और धोखेबाजों की आवाज ही सबसे ऊँची है। इसकी आवाज में सच्चे व्यक्ति की आवाज घुटकर रह जाती है। ऐसे में सच्चा व्यक्ति सही होते हुए भी दबने को विवश हो जाता है। जुगनू की लौ में पढ़ना इस बात का प्रतीक है कि आज की शिक्षा व्यवस्था हमारे काम नहीं आ सकती। जिस प्रकार जुगनू के प्रकाश से हमारे जीवन में उजाला नहीं आ सकता, उसी प्रकार आज की शिक्षा व्यवस्था से गरीबों का भला नहीं हो सकता। हम केवल अपनी मुट्ठियाँ भींचकर, भीतर ही भीतर क्रोध प्रकट करते हुए किसी भी तरह इस समय को काटते चलते हैं। फिर भी ये स्थितियाँ उतनी खतरनाक नहीं हैं, क्योंकि हमें इससे भी अधिक खतरनाक स्थितियों को झेलने के लिए विवश होना पड़ेगा।

चौथा पद्यांश

सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना।

birlaeducation.org

भावार्थ: कवि कहता है कि सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना, अर्थात् अन्याय, छल-कपट और शोषण को बिना विरोध किए, मुर्दे की तरह जीना। जिस व्यक्ति में इस व्यवस्था को देखकर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती, वह जिंदा नहीं, चलती-फिरती लाश के समान है। रोजी-रोटी कमाने के लिए रोज घर से निकलना और फिर वापस घर लौट आना, यह बंधी-बँधाई जिंदगी तो पशु भी जी लेते हैं। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है। कवि का मानना है कि हर हालत में हमें अपने सपने को जिंदा रखना होगा, अन्यथा यह सबसे खतरनाक स्थिति होगी।

कवि परिचय

'पाश' का पूरा नाम अवतार सिंह संधू है। उनका जन्म 9 सितंबर 1950 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव में हुआ था। वे पंजाबी के प्रमुख आधुनिक कवि हैं। उन्होंने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से स्नातक की पढ़ाई की। उनकी कविताओं में आम आदमी का संघर्ष और व्यवस्था के प्रति विद्रोह का तीखा स्वर सुनाई देता है। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'लौहकथा', 'उड़दे बाजां मगर' और 'साडै समिया बिच' हैं। उनका देहांत 23 मार्च 1988 को मात्र 37 वर्ष की आयु में हो गया।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
मेहनत की लूट	मेहनत की कमाई को छीन लेना
पुलिस की मार	पुलिस का अत्याचार

गद्दारी	विश्वासघात करना
लोभ की मुट्ठी	रिश्वतखोरी, लालच की पकड़
बैठे-बिठाए	बेवजह, बिना किसी कारण के
सहमी-सी चुप	भय से उपजी हुई चुप्पी
कपट	छल, धोखा
जुगनू	एक प्रकार का कीट जिसकी दुम से रात में रोशनी निकलती है
लौ	रोशनी, ज्वाला
मुट्ठियाँ भींचना	गुस्से में मुट्ठी कसकर बंद करना
मुर्दा शांति	निष्क्रियता, बिना किसी विरोध के जीना
तड़प	बेचैनी, छटपटाहट

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. 'पाश' का पूरा नाम क्या है?

(क) अवतार सिंह संधू
(ख) सरदार सिंह संधू
(ग) परमजीत सिंह संधू
(घ) सरबजीत सिंह संधू

उत्तर: (क) अवतार सिंह संधू

---

2. 'पाश' का जन्म किस राज्य में हुआ था?

(क) बिहार
(ख) बंगाल
(ग) पंजाब
(घ) गुजरात

उत्तर: (ग) पंजाब

---

3. 'पाश' के गाँव का नाम क्या है?

(क) बाज़ारबासा
(ख) अमृतसर
(ग) तलवंडी सलेम
(घ) नकोदर

उत्तर: (ग) तलवंडी सलेम

---

hirlaeducation.org

4. कवि 'पाश' का जन्म कब हुआ था?

(क) सन् 1950 में

(ख) सन् 1960 में

(ग) सन् 1970 में

(घ) सन् 1940 में

उत्तर: (क) सन् 1950 में

---

5. 'पाश' मूलतः किस भाषा के कवि हैं?

(क) हिंदी

(ख) उर्दू

(ग) पंजाबी

(घ) बंग्ला

उत्तर: (ग) पंजाबी

---

6. 'लौहकथा' के रचनाकार कौन हैं?

(क) पाश

(ख) दिनकर

(ग) निराला

(घ) पंत

birlaeducation.org

उत्तर: (क) पाश

---

7. इन सबमें सबसे खतरनाक क्या है?

(क) जुगनू की लौ में पढ़ना

(ख) सपनों का मर जाना

(ग) मेहनत की लूट

(घ) पुलिस की मार

उत्तर: (ख) सपनों का मर जाना

---

8. 'मुर्दा शांति से भर जाना' का अर्थ है?

(क) मुर्दा का शांति से मर जाना

(ख) मुर्दा का जाग जाना

(ग) तटस्थ हो जाना

(घ) मुर्दे का उठ बैठना

उत्तर: (ग) तटस्थ हो जाना

---

9. 'मुट्ठियाँ भींचकर' का अर्थ है?

(क) गुस्सा व्यक्त करना

(ख) मुट्ठी खोलना

(ग) मुट्ठी गर्म करना

(घ) मुट्ठी भरना

उत्तर: (क) गुस्सा व्यक्त करना

---

10. 'वक्त निकाल लेना' का अर्थ है?

(क) वक्त चुराना

(ख) वक्त को समझना

(ग) वक्त बिता देना

(घ) वक्त पर निकल आना

उत्तर: (ग) वक्त बिता देना

---

11. 'साडै समिया बिच' किस भाषा में रचित है?

(क) उर्दू में

(ख) बंग्ला में

(ग) मराठी में

(घ) पंजाबी में

उत्तर: (घ) पंजाबी में

birlaeducation.org

---

12. कवि 'पाश' का देहांत कब हुआ था?

(क) 23 मार्च 1985 को

(ख) 23 मार्च 1986 को

(ग) 23 मार्च 1987 को

(घ) 23 मार्च 1988 को

उत्तर: (घ) 23 मार्च 1988 को

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. 'पाश' का पूरा नाम _____ है।

उत्तर: अवतार सिंह संधू

---

2. पाश का जन्म सन् _____ में हुआ था।

उत्तर: 1950

---

3. पाश _____ भाषा के कवि हैं।

उत्तर: पंजाबी

---

4. सबसे खतरनाक _____ का मर जाना है।

उत्तर: सपनों

---

5. मेहनत की लूट सबसे खतरनाक _____ होती।

उत्तर: नहीं

---

6. जुगनू की लौ में _____ बुरा तो है।

उत्तर: पढ़ना

---

7. कपट के शोर में सही होते हुए भी _____ जाना बुरा तो है।

उत्तर: दब

---

8. सबसे खतरनाक होता है मुर्दा _____ से भर जाना।

उत्तर: शांति

---

9. 'लौहकथा' _____ की रचना है।

उत्तर: पाश

birlaeducation.org

---

10. पाश का देहांत _____ को हुआ था।

उत्तर: 23 मार्च 1988

---

3. सही / गलत

1. 'पाश' का पूरा नाम करतार सिंह संधू है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: 'पाश' का पूरा नाम अवतार सिंह संधू है।

---

2. पाश पंजाबी के कवि हैं।

उत्तर: सही।

---

3. मेहनत की लूट सबसे खतरनाक होती है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती।

---

4. पुलिस की मार से हमारे सपने मर जाते हैं।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: पुलिस की मार हमारे सपनों को नहीं मार सकती, इसलिए वह सबसे खतरनाक नहीं है।

---

5. जुगनू की लौ में पढ़ना सबसे खतरनाक है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: जुगनू की लौ में पढ़ना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं है।

---

6. सबसे खतरनाक सपनों का मर जाना है।

उत्तर: सही।

---

7. मुर्दा शांति से भर जाना तटस्थ हो जाना है।

उत्तर: सही।

---

8. 'लौहकथा' पाश की रचना है।

उत्तर: सही।

---

9. पाश का जन्म 9 सितंबर 1950 को हुआ था।

उत्तर: सही।

---

10. कवि का संदेश है कि सपने कभी मरने न दें।

उत्तर: सही।

---

birlaeducation.org

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. कवि ने किन परिस्थितियों को खतरनाक नहीं माना है? पाठ्यपुस्तक

कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी, बैठे-बिठाए पकड़ा जाना, सहमी-सी चुप में जकड़ा जाना, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना, जुगनू की लौ में पढ़ना और मुट्ठियाँ भींचकर वक्त निकाल लेना, इन सबको सबसे खतरनाक नहीं माना है।

---

2. कवि ने सबसे खतरनाक किसे माना है? पाठ्यपुस्तक

कवि ने जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने, बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने और मुर्दा शांति से भर जाने को सबसे खतरनाक माना है। सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना।

---

3. कवि मेहनत की लूट को सबसे खतरनाक क्यों नहीं मानता? पाठ्यपुस्तक

अगर कोई हमारी मेहनत को लूट ले जाए तो फिर से मेहनत करके उसे पाया जा सकता है, इसीलिए कवि ने मेहनत की लूट को सबसे खतरनाक नहीं माना है।

---

4. 'पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती' का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

पुलिस की मार हमारे सपनों को नहीं मार सकती, इसलिए कवि ने पुलिस की मार को सबसे खतरनाक नहीं माना है।

---

5. 'बैठे-बिठाए पकड़े जाना' का अर्थ स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

आज की भ्रष्ट व्यवस्था में पुलिस अपराधियों के बजाय आम आदमी को पकड़ लेती है और अपनी सफलता का ढिंढोरा पीटती है। बेवजह, बिना किसी कारण के पकड़ा जाना ही 'बैठे-बिठाए पकड़ा जाना' है।

---

6. 'जुगनू की लौ में पढ़ने' का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

'जुगनू की लौ में पढ़ने' से आज की शिक्षा व्यवस्था पर चोट की गई है। जिस प्रकार जुगनू के प्रकाश से हमारे जीवन में उजाला नहीं आ सकता, उसी प्रकार आज की शिक्षा व्यवस्था से गरीबों का भला नहीं हो सकता।

---

7. 'सही होते हुए भी दब जाना' का आशय स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

आज समाज में भ्रष्टाचारी, बेईमान और आपराधिक छवि वाले व्यक्तियों का ही बोलबाला है। सच्चा व्यक्ति इनके भय से कुछ बोलने में भी हिचकता है। वह ऐसी शक्तियों के आगे सही होते हुए भी दबने को विवश हो जाता है।

---

8. 'मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना' का आशय स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

सामने अनाचार और अत्याचार को होते देखकर भी उसका विरोध न कर पाना और केवल मुट्ठियों को भींचकर रह जाना तो व्यक्ति के लिए बुरा तो है, लेकिन यह स्थिति भी उतनी खतरनाक नहीं है।

---

9. 'मुर्दा शांति से भर जाना' का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

जिस प्रकार मुर्दा संसार से कोई नाता न रखकर शांत रहता है, सही-गलत का कोई असर उस पर नहीं होता, ठीक वैसे ही जिस व्यक्ति के सपने मर जाते हैं, वह जीवित होते हुए भी मुर्दे की तरह जीता है।

hindieducation.org

---

10. 'न होना तड़प का सब सहन कर जाना' से कवि का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

सामने सब कुछ गलत होते देखकर भी दिल में किसी प्रकार की बेचैनी का पैदा न होना, यह खतरनाक स्थिति है। अगर आदमी में ऐसी स्थिति में बेचैनी नहीं है तो इसका मतलब यह है कि वह जीते-जी मर चुका है, क्योंकि मुर्दों में तड़प नहीं होती।

---

11. 'घर से निकलना काम पर और काम से लौटकर घर आना' सबसे खतरनाक क्यों है? अतिरिक्त

रोजी-रोटी कमाने के लिए रोज घर से निकलना और फिर वापस घर लौट आना, यह बंधी-बँधाई जिंदगी तो पशु भी जी लेते हैं। इसमें कोई सपना, कोई तड़प और कोई विरोध नहीं है, इसलिए कवि इसे सबसे खतरनाक मानता है।

---

12. 'कपट के शोर' का तात्पर्य स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

आज की भ्रष्ट व्यवस्था में गलत, छली और धोखेबाजों की आवाज ही सबसे ऊँची है। इसकी आवाज में सच्चे व्यक्ति की आवाज घुटकर रह जाती है। 'कपट के शोर' का तात्पर्य यही है।

---

13. 'सबसे खतरनाक' कविता का मूल संदेश क्या है? पाठ्यपुस्तक

कविता का मूल संदेश यह है कि बुरी से बुरी खतरनाक परिस्थितियों में भी हम अपने सपने को न मरने दें। विपरीत परिस्थितियों से जूझने की शक्ति को क्षीण न पड़ने दें और अपने सपनों को जिंदा रखें।

---

14. 'पाश' किस कवि का उपनाम है? पाठ्यपुस्तक

'पाश' अवतार सिंह संधू का उपनाम है। वे पंजाब के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव के रहने वाले थे।

---

15. पाश का जन्म कब और कहाँ हुआ था? पाठ्यपुस्तक

पाश का जन्म 9 सितंबर सन् 1950 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव में हुआ था।

---

16. पाश की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए। पाठ्यपुस्तक

पाश की दो रचनाएँ 'लौहकथा' और 'उड़दे बाजां मगर' हैं। ('साडै समिया बिच' और 'लड़ेंगे साथी' भी उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।)

---

17. पाश की कविताओं की क्या विशेषताएँ हैं? अतिरिक्त

पाश की कविताओं में विचार, भाव, संस्कृति और परंपरा का गहरा बोध मिलता है। उनकी कविताओं में वह व्यवस्था, निराशा और गुस्सा नजर आता है जो आम आदमी से गहरे लगाव के बिना संभव नहीं है।

---

18. 'गद्दारी-लोभ की मुट्ठी' से क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

'गद्दारी-लोभ की मुट्ठी' का तात्पर्य विश्वासघात और रिश्वतखोरी से है। आज पूरा भारत भ्रष्टाचार की गिरफ्त में आ चुका है, लेकिन कवि इसे सबसे खतरनाक नहीं मानता।

---

19. 'सपनों का मर जाना' से कवि का क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

birdaeducation.org

'सपनों का मर जाना' से कवि का तात्पर्य यह है कि जब हम अपने भविष्य के सुनहरे सपने बुनना बंद कर देते हैं और यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैं, जब हम निष्क्रिय होकर बेजान की तरह चुपचाप शांति से अन्याय और अत्याचार को सहन करते हैं, तब हमारे सपने मर जाते हैं।

---

20. कविता में 'सबसे खतरनाक' शब्द बार-बार क्यों दोहराया गया है? अतिरिक्त

'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता का कथ्य प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने उभरकर आता है। इससे कविता में पाठकों की रुचि और जिज्ञासा बनी रहती है और सबसे खतरनाक स्थिति का भाव गहरा हो जाता है।

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. 'सबसे खतरनाक' कविता का सारांश लिखें। पाठ्यपुस्तक

कवि पाश कहता है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार और गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती। बैठे-बिठाए पकड़ा जाना बुरा तो है और सहमी-सी चुप में जकड़ा जाना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं होता। कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है, किसी जुगनू की लौ में पढ़ना बुरा तो है और मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं होता। सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना, न होना तड़प का और सब सहन कर जाना। घर से निकलना काम पर और काम से लौटकर घर आना, यही बंधी-बँधाई जिंदगी सबसे खतरनाक है। सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना।

---

2. 'सबसे खतरनाक' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखें। पाठ्यपुस्तक

इस कविता में कवि पाश ने आम आदमी की पीड़ा और उसके कारणों को अपनी आवाज दी है। कवि का कहना है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार और गद्दारी-लोभ की मुट्ठी खतरनाक तो हैं, लेकिन सबसे खतरनाक नहीं हैं। बैठे-बिठाए पकड़ा जाना, सहमी-सी चुप में जकड़ा जाना, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना और जुगनू की लौ में पढ़ना, ये सब बुरे तो हैं, पर सबसे खतरनाक नहीं हैं। सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना, न होना तड़प का और सब सहन कर जाना। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है। कवि का संदेश है कि हर हालत में हमें अपने सपने को जिंदा रखना होगा।

---

3. 'सबसे खतरनाक' कविता में निहित संदेश को लिखें। पाठ्यपुस्तक

इस कविता में निहित संदेश यह है कि बुरी से बुरी खतरनाक परिस्थितियों में भी हम अपने सपने को न मरने दें। अन्याय, छल-कपट और शोषण को बिना विरोध किए, मुर्दे की तरह जीना बाकी स्थितियों से अधिक खतरनाक है। जिस व्यक्ति में व्यवस्था को देखकर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती, वह जिंदा नहीं, चलती-फिरती लाश के समान है। कवि चाहता है कि हम अपने दिल में विरोध की चिनगारी जगाए रखें और अपने सपनों को जिंदा रखें। तत्कालीन समस्याओं से मुँह मोड़कर उन्हें ज्यों का त्यों सहन न करने का और अपने सपनों को न टूटने देने का संदेश ही इस कविता का लक्ष्य है।

---

4. कवि ने किन स्थितियों को सबसे खतरनाक नहीं माना और क्यों? पाठ्यपुस्तक

कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी, बैठे-बिठाए पकड़ा जाना, सहमी-सी चुप में जकड़ा जाना, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना, जुगनू की लौ में पढ़ना और मुट्ठियाँ भींचकर वक्त निकाल लेना, इन सबको सबसे खतरनाक नहीं माना है। इसका कारण यह है कि ये स्थितियाँ खतरनाक तो हैं, लेकिन इनसे भी बुरी और खतरनाक स्थितियाँ हैं जिनका शिकार आम आदमी को अपने रोजमर्रा के जीवन में होना पड़ता है। मेहनत लुट जाए तो फिर से मेहनत करके पाई जा सकती है और पुलिस की मार सपनों को नहीं मार सकती। इसलिए कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता।

biharieducation.org

---

5. सबसे खतरनाक स्थिति किसे और क्यों बताया गया है? पाठ्यपुस्तक

सबसे खतरनाक स्थिति मुर्दा शांति से भर जाना, न होना तड़प का और सब सहन कर जाना है। सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना। जब हम अपने भविष्य के सुनहरे सपने बुनना बंद कर देते हैं और यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैं, जब हम निष्क्रिय होकर बेजान की तरह चुपचाप शांति से अन्याय और अत्याचार को सहन करते हैं, तब हमारे सपने मर जाते हैं। रोजी-रोटी कमाने के लिए रोज घर से निकलना और फिर वापस घर लौट आना, यह बंधी-बँधाई जिंदगी तो पशु भी जी लेते हैं। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है।

---

6. प्रथम पद्यांश की व्याख्या कीजिए: 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती, पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती।' पाठ्यपुस्तक

प्रस्तुत पंक्तियाँ अवतार सिंह संधू 'पाश' की कविता 'सबसे खतरनाक' से ली गई हैं। कवि का कहना है कि किसी भी समाज में रहने वाले व्यक्ति के लिए किसी के द्वारा उसकी मेहनत की कमाई लूट लिया जाना, दोषी न होते हुए भी पुलिस का अत्याचार सहना या किसी के द्वारा किए गए विश्वासघात और रिश्वतखोरी का शिकार होना उतना खतरनाक नहीं है। हालाँकि ये सारी स्थितियाँ किसी भी व्यक्ति के लिए खतरनाक हैं, लेकिन कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता, क्योंकि समाज में इससे भी बुरी और खतरनाक स्थितियाँ हैं जिनका शिकार आम आदमी को अपने रोजमर्रा के जीवन में होना पड़ता है। इन

पंक्तियों में वर्तमान व्यवस्था के प्रति विद्रोह का भाव साफ-साफ झलकता है और भाषा सीधी-सपाट लेकिन गहरी चोट करने वाली है।

---

7. द्वितीय पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'बैठे-बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है, सहमी-सी चुप में जकड़े जाना बुरा तो है, पर सबसे खतरनाक नहीं होता।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि ने सरकारी तंत्र की पोल खोलते हुए कहा है कि आज की स्थिति बड़ी ही भयावह है। अपराधी समाज में खुले आम घूमते हैं, लेकिन अपराध पर नियंत्रण और अपराधियों की गिरफ्तारी के नाम पर निर्दोष लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता है। लोग भय के कारण सहमकर चुप्पी ओढ़े रहते हैं। ये स्थितियाँ अच्छी तो नहीं कही जा सकतीं, फिर भी कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता, क्योंकि समाज में इससे भी खतरनाक स्थितियों को भोगने के लिए लोग विवश हैं। इसी स्थिति का चित्रण करते हुए नागार्जुन ने लिखा था कि बंदूकें ही हुई अब माध्यम शासन का और गाली ही पर्याय बन गई है राशन का।

---

8. तृतीय पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'कपट के शोर में, सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि कहता है कि आज के माहौल में सच्चाई की आवाज को दबा दिया जाता है, क्योंकि कपटी लोगों की आवाज उनसे ऊँची है। ऐसे में सच्चे व्यक्ति को सही होते हुए भी दब जाना पड़ता है। यह स्थिति आज की नहीं है, सदियों से है। कवि रहीम भी इसी स्थिति के शिकार बने थे। जुगनू की लौ में पढ़ना इस बात का प्रतीक है कि जो शिक्षा व्यवस्था आज है, वह रोजी-रोटी देने के बजाय आँखों की रोशनी भी छीन लेती है। यह बुरा तो है, लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता, क्योंकि हम केवल अपनी मुट्ठियों को भींचकर, भीतर ही भीतर क्रोध प्रकट करते हुए किसी भी तरह इस समय को काटते चलते हैं। फिर भी ये स्थितियाँ उतनी खतरनाक नहीं हैं।

birlaeducation.org

---

9. चतुर्थ पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'सबसे खतरनाक होता है, मुर्दा शांति से भर जाना, न होना तड़प का सब सहन कर जाना।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि कहता है कि अन्याय, छल-कपट और शोषण को बिना विरोध किए, मुर्दे की तरह जीना बाकी स्थितियों से अधिक खतरनाक है। जिस व्यक्ति में इस व्यवस्था को देखकर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती, वह जिंदा नहीं, चलती-फिरती लाश के समान है। रोजी-रोटी कमाने के लिए रोज घर से निकलना और फिर वापस घर लौट आना, यह बंधी-बँधाई जिंदगी तो पशु भी जी लेते हैं। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है। कवि दुष्यंत के शब्दों में कहता है कि मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

---

10. पाश का जीवन परिचय लिखिए। अतिरिक्त

पाश का पूरा नाम अवतार सिंह संधू है। उनका जन्म 9 सितंबर सन् 1950 को तलवंडी सलेम, तहसील नकोदर, जिला जालंधर (पंजाब) में हुआ था। पाश आधुनिक पंजाबी साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनका परिवार मध्यमवर्गीय किसान परिवार था। उन्होंने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से स्नातक की पढ़ाई की। विभिन्न जन आंदोलनों से जुड़े रहने के कारण उनकी कविताओं में विद्रोह का तीखा स्वर सुनाई देता है। उनकी राजनीतिक कविताओं में विचार और भाव के साथ-साथ लोकसंस्कृति और परंपरा में जो व्यथा, निराशा और गुस्सा नजर आता है, वह आम आदमी से गहरे जुड़ाव के बिना संभव नहीं है। पंजाबी साहित्य के इस प्रतिनिधि कवि का देहांत मात्र 37 वर्ष की उम्र में 23 मार्च सन् 1988 को हो गया।

---

11. पाश की कविताओं की विशेषताएँ लिखिए। अतिरिक्त

पाश की कविताओं में विचार, भाव, संस्कृति और परंपरा का गहरा बोध मिलता है। उनकी कविताओं में वह व्यवस्था, निराशा और गुस्सा नजर आता है जो आम आदमी से गहरे लगाव के बिना संभव नहीं है। उनकी कविताओं में आम आदमी का संघर्ष, निराशा, दुख की छायाएँ, अपने समय से टकराने की इच्छा और सपनों के बनने-टूटने की गूँज शामिल है। उनकी राजनीतिक कविताओं में अपनी संस्कृति और परंपरा से गहरा लगाव ही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। उनकी भाषा सीधी-सपाट लेकिन गहरी चोट करने वाली है।

---

12. 'मुर्दा शांति से भर जाना' और 'सपनों का मर जाना' का संबंध स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

मुर्दा शांति से भर जाना और सपनों का मर जाना एक ही स्थिति के दो रूप हैं। जब व्यक्ति अन्याय, छल-कपट और शोषण को बिना विरोध किए सहन करने लगता है, तो वह मुर्दा शांति से भर जाता है। उसके दिल में कोई तड़प नहीं रहती, कोई बेचैनी नहीं रहती। जब तड़प मर जाती है तो सपने भी मर जाते हैं, क्योंकि सपने वही देखता है जिसके दिल में कुछ पाने की बेचैनी होती है। इसलिए कवि कहता है कि सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना और सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना।

---

13. कविता के शीर्षक 'सबसे खतरनाक' की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कविता का शीर्षक 'सबसे खतरनाक' पूरी तरह सार्थक है, क्योंकि पूरी कविता में यही बताया गया है कि सबसे खतरनाक क्या है। कवि एक-एक करके उन स्थितियों को गिनता है जो खतरनाक तो हैं, लेकिन सबसे खतरनाक नहीं हैं। फिर वह बताता है कि सबसे खतरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना। 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता का कथ्य प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने उभरकर आता है। शीर्षक कविता के विषय, भाव और संदेश तीनों को व्यक्त करता है, इसलिए यह पूरी तरह उपयुक्त है।

birlaeducation.org

---

14. कविता में व्यवस्था के प्रति विद्रोह का भाव कैसे व्यक्त हुआ है? अतिरिक्त

कविता में व्यवस्था के प्रति विद्रोह का भाव साफ-साफ झलकता है। कवि मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी, बैठे-बिठाए पकड़ा जाना और कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना, इन सब स्थितियों का वर्णन करके सरकारी तंत्र की पोल खोलता है। वह कहता है कि अपराधी समाज में खुले आम घूमते हैं, लेकिन निर्दोष लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता है। कवि चाहता है कि हमारे दिल में विरोध की चिनगारी पैदा हो, क्योंकि जब तक विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक यह सबसे खतरनाक स्थिति है।

---

15. 'जुगनू की लौ में पढ़ना' शिक्षा व्यवस्था पर कैसी चोट है? अतिरिक्त

'जुगनू की लौ में पढ़ना' शिक्षा व्यवस्था पर गहरी चोट है। आज की शिक्षा व्यवस्था में गरीबों के लिए जगह नहीं है। न तो उनके पास पैसे हैं, न ही उम्मीदों के समान अवसर। आम आदमी आँखें फोड़कर पढ़ने के बाद भी दो वक्त की रोटी के लिए तरसता है। जिस प्रकार जुगनू के प्रकाश से हमारे जीवन में उजाला नहीं आ सकता, उसी प्रकार आज की शिक्षा व्यवस्था हमारे काम नहीं आ सकती। यह शिक्षा व्यवस्था रोजी-रोटी देने के बजाय आँखों की रोशनी भी छीन लेती है।

---

16. कवि के अनुसार जिंदा रहने का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

कवि के अनुसार जिंदा रहने का अर्थ केवल साँस लेना और घर से काम पर जाना तथा काम से घर लौट आना नहीं है। जिंदा रहने का अर्थ है अपने दिल में तड़प रखना, अन्याय को देखकर बेचैनी महसूस करना और अपने सपनों को जिंदा रखना। जिस व्यक्ति

में व्यवस्था को देखकर कोई बेचैनी नहीं पैदा होती, वह जिंदा नहीं, चलती-फिरती लाश के समान है। जब तक हमारे दिल में विरोध की चिनगारी नहीं पैदा होगी, तब तक हम जिंदा नहीं कहला सकते।

---

17. 'बैठे-बिठाए पकड़े जाना' और 'सहमी-सी चुप में जकड़े जाना' का भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कवि ने सरकारी तंत्र की पोल खोलते हुए कहा है कि आज की स्थिति बड़ी ही भयावह है। अपराधी समाज में खुले आम घूमते हैं, लेकिन अपराध पर नियंत्रण और अपराधियों की गिरफ्तारी के नाम पर निर्दोष लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता है। लोग भय के कारण सहमकर चुप्पी ओढ़े रहते हैं। ये स्थितियाँ अच्छी तो नहीं कही जा सकतीं, फिर भी कवि इन स्थितियों को उतना खतरनाक नहीं मानता, क्योंकि समाज में इससे भी खतरनाक स्थितियों को भोगने के लिए लोग विवश हैं।

---

18. कविता की भाषा शैली की विशेषताएँ लिखिए। अतिरिक्त

कविता की भाषा सीधी-सपाट लेकिन गहरी चोट करने वाली है। कवि ने आम आदमी की भाषा में अपनी बात कही है। 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता का कथ्य प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने उभरकर आता है। कविता में 'मेहनत की लूट', 'पुलिस की मार', 'गद्दारी-लोभ की मुट्ठी', 'जुगनू की लौ' और 'मुर्दा शांति' जैसे सशक्त प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। भाषा में विद्रोह का तीखा स्वर है और वह पाठक के दिल को सीधे छूती है।

---

19. कविता में 'सबसे खतरनाक' की पुनरावृत्ति का क्या प्रभाव है? अतिरिक्त

'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता का कथ्य प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने उभरकर आता है। इससे कविता में पाठकों की रुचि और जिज्ञासा बनी रहती है। हर बार जब कवि 'सबसे खतरनाक' कहता है, तो पाठक सोचता है कि अब वह सबसे खतरनाक स्थिति बताएगा। इस पुनरावृत्ति से कविता का केंद्रीय भाव, अर्थात् सपनों का मर जाना, पाठक के मन में गहराई से बैठ जाता है।

birlaeducation.org

---

20. आज के समय में इस कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

आज के समय में भी यह कविता पूरी तरह प्रासंगिक है। आज भी मेहनत की लूट, पुलिस की मार, भ्रष्टाचार और कपट के शोर में सच्चे व्यक्ति का दब जाना, ये सब स्थितियाँ हमारे समाज में मौजूद हैं। आज भी शिक्षा व्यवस्था गरीबों के लिए पर्याप्त अवसर नहीं दे पाती। सबसे बड़ी बात यह है कि आज भी बहुत से लोग अन्याय को देखकर चुप रहते हैं और बंधी-बँधाई जिंदगी जीते हुए अपने सपनों को मरने देते हैं। कवि का संदेश आज भी उतना ही जरूरी है कि हम अपने सपनों को कभी मरने न दें और अपने दिल में विरोध की चिनगारी जगाए रखें।
